दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

पाठ्यक्रम (Syllabus)

डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड

(एक वर्षीय)

अध्ययन मंडल (बोर्ड ऑफ स्टडीज) की बैठक की कार्यवाही विवरण

दिनांक 11 मई 2024 अपराह्न 12:15 बजे प्रतिकुलपति जी के मीटिंग हाल में डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड एवं एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान पाठ्यक्रम को अद्यतन करने हेतु बोर्ड ऑफ स्टडीज (BOS) की ऑनलाइन मीटिंग सम्पन्न हुयी। इस मीटिंग में निम्न सम्मानित सदस्य उपस्थित हुए।

- **बाह्य सदस्य**
    1. डॉ.विजय शंकर द्विवेदी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो.– 8527118375 (ऑनलाइन)
    2. डॉ.अंशुल दुबे,तिलक डिग्री कालेज, औरैया, मो.– 9696394716 (ऑनलाइन)
    3. प्रो.प्रदीप कुमार दीक्षित,बी एस एस डी कालेज, कानपुर मो.–7489423390
- **विभागीय सदस्य**
    1. प्रो0 सुधीर कुमार अवस्थी, निदेशक
    2. डॉ. दुर्गेश सिंह
    3. डॉ. एस.के. द्विवेदी
    4. श्री स्वयं प्रकाश अवस्थी

बैठक में निम्न अनुशंसा की गयी :–

1. एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान के पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन (प्रश्नपत्र वार सन्दर्भित पुस्तकों की सूची) के अनुमोदन किये जाने की अनुशंसा पर सहमति व्यक्त की गयी।
2. डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड के पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन (रूद्राष्टाध्यायी सम्पूर्ण पाठ) के अनुमोदन किये जाने की अनुशंसा पर सहमति व्यक्त की गयी।
3. पाठ्यक्रम संरचना पर आंशिक संशोधन के अद्यतन कर अनुमोदन किये जाने की अनुशंसा पर सहमति व्यक्त की गयी।
4. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु सभी संकायों में उत्तीर्ण छात्रों के प्रवेश पर सहमति व्यक्त की गयी।
5. आंशिक संशोधन का अधिकार निदेशक के पास सुरक्षित रखा गया।

- नोट : बाह्य सदस्यों के ऑनलाइन जुड़े होने के कारण ऑनलाइन ही सहमति प्राप्त की गयी।

1. प्रो0 सुधीर कुमार अवस्थी, निदेशक
2. डॉ.विजय शंकर द्विवेदी,
3. प्रो.प्रदीप कुमार दीक्षित,
4. डॉ.अंशुल दुबे
5. डॉ. एस.के. द्विवेदी
6. श्री स्वयं प्रकाश अवस्थी
7. डॉ. दुर्गेश सिंह, सहायक निदेशक

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Deendayal Shodh Kendra

Diploma in Karmkand

Pathaykram Sanrachna

Semester – 1

Syllabus Developed By			
Name of BoS Convenor/BoS Member	**Designation**	**Department**	**College/University**

A	B	C	D	E	F	G
			I^st^ Semester			
COURSE CODE	**TYPE**	**COURSE TITLE**	**CREDITS**	**CIA**	**ESE**	**MAX. MARKS**
DKK-101	Theory	Vadikcharya Ka Gyan	4	25	75	100
DKK-102	Theory	Pujan Padhati	4	25	75	100
DKK-103	Theory	Panchang Parichay	4	25	75	100
DKK-104	Practical	Prayogik (Karmkand)	4	25	75	100
		Total Number	**16**			**400**
			2nd Semester			
DKK-201	Theory	~~Visistha~~ Vishista Poojan	4	25	75	100
DKK-202	Theory	Dev Sthapna Evam Poojan	4	25	75	100
DKK-203	Theory	Muhurt Evam Melapak	4	25	75	100
DKK-204	Practical	Prayogik (Karmkand)	4	25	75	100
		Total Number	**16**			**800**

Total Credit of the Programme - 32

Total Marks - 800

Program Outcomes

1. <u>धार्मिक ज्ञान</u> – कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम से धार्मिक ग्रंथों, मंत्रों, पूजा विधियों और संस्कारों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है। इससे व्यक्ति अपनी धार्मिक परंपराओं और रीति–रिवाजों को बेहतर तरीके से समझ सकता है।
2. <u>आध्यात्मिक विकासः</u>– धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठानों की विधिवत जानकारी प्राप्त करने से व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास होता है। इससे मानसिक शांति और स्थिरता मिलती है।
3. <u>सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षणः</u> – कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम भारतीय संस्कृति और परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसे पढ़ने से इनकी संधारण और संरक्षण में मदद मिलती है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी इन परंपराओं से अवगत हो सकती हैं।
4. व्यवहारिक लाभः – धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी होने से व्यक्ति विभिन्न धार्मिक समारोहों और उत्सवों में सही तरीके से भाग ले सकता है। इससे समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती है।
5. <u>समाज सेवाः</u> – कर्मकाण्ड की शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति समाज में धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने में मदद कर सकता है, जिससे समाज को भी लाभ होता है।
6. <u>मानसिक शांति और संतुलनः</u> – धार्मिक अनुष्ठानों और मंत्रों के उच्चारण से मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन प्राप्त होता है। ध्यान और प्रार्थना जैसी विधियों से तनाव कम होता है और मन को शांति मिलती है।
7. <u>आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमताः</u> – धार्मिक ज्ञान और अनुष्ठानों की जानकारी से व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है और वह धार्मिक कार्यक्रमों में नेतृत्व कर सकता है।
8. <u>वैदिक और पौराणिक ज्ञानः</u> – कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम से व्यक्ति वैदिक और पौराणिक ज्ञान प्राप्त करता है, जिससे उसे धर्म, दर्शन और जीवन के अन्य पहलुओं की गहरी समझ मिलती है।

<u>निष्कर्षतः</u> कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम के पढ़ने से व्यक्ति को धार्मिक, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत विकास के अनेक लाभ प्राप्त होते हैं, जिससे उसका जीवन अधिक संतुलित और समृद्ध बनता है।

ज्ञानप्रकाश अवस्थी

दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम (Syllabus)

डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड (एक वर्षीय)

पाठ्यक्रम का दृष्टिकोण एवं कालावधि

1. उद्देश्य

- यह अनुष्ठान का परिचय देता है तथा उसके महत्व को बताता है ।
- पूजा की विधि का ज्ञान और उसके प्रयोग में निपुणता प्राप्त कराना ।
- अनुष्ठानों, संकल्पो और मंत्रों का शुद्ध पाठ – उच्चारण विधि शिक्षण।
- भारतीय संस्कृति को बनाए रखना और उसका पोषण करना।

- यह पाठ्यक्रम एक (1) वर्ष का होगा, इसमें दो सेमेस्टर तथा प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्नपत्र निर्धारित होंगे।

पाठ्यक्रम के लिए पात्रता

- छात्र का किसी भी संकाय में 12वीं (इण्टर) होना अपेक्षित है।
- छात्रों का चयन विश्वविद्यालय के नियमों एवं परिनियमों के आधार पर किया जायेगा।

क्रेडिट

- पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्येक प्रश्न पत्र 04 क्रेडिट का होगा। प्रत्येक प्रश्न पत्र में छात्र को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 33 प्रतिशत अंक विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार अर्जित करना अनिवार्य होगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 75 प्रतिशत या इससे अधिक होंगे, उसे विशिष्टता के साथ उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 60 प्रतिशत से 75 प्रतिशत के बीच में होंगे, उसे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 45 प्रतिशत से 59 प्रतिशत के बीच मे होंगे, उसे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 33 प्रतिशत तथा 44 प्रतिशत के बीच होंगे, उसे तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।
- परीक्षार्थी को उत्तीर्ण होने के लिए हर प्रश्न पत्र में 33 प्रतिशत अंक अर्जित करना अनिवार्य है।

स्वयं प्रकाश अवस्थी

उपस्थिति

छात्रों को पाठ्यक्रम के गम्भीर पक्षों को समझने के लिए निर्धारित समय सारिणी के अनुसार व्याख्यान में अपनी उपस्थिति दर्ज करनी होगी, जिसमें 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है।

परीक्षा एवं अंक

प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंकों का निर्धारित होगा। जिसमें 75 अंक लिखित परीक्षा के आधार पर तथा 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर विश्वविद्यालय नियमों के आधार पर होगा।

कुल स्थान (seats)

दीनदयाल शोध केन्द्र में एक वर्षीय कर्मकाण्ड डिप्लोमा के लिए 30 स्थान (Seats)निर्धारित है। पाठ्यकम शुल्क 5,000 रूपये मात्र निर्धारित है।

अनुष्ठान प्रशिक्षण पाठ्यकम के परिणाम–

- इससे छात्रों को अनुष्ठानों का परिचय और महत्व सीखने में मदद मिलेगी ।
- संस्कारों में संकल्पों, शब्दों स्तुतियों और मंत्रों का सही–सही उच्चारण करने में सक्षम होते हैं ।
- छात्र विभिन्न पूजा पद्धतियों और हवन अनुष्ठानों को सीख कर उनका उपयोग कर पाते हैं ।
- यह कोर्स भारतीय सेना में धर्म शिक्षक के रूप में तथा समाज में पौहित्य कार्य की दक्षता प्रदान करेगा ।
- विभिन्न मांगलिक अवसरों में अनुष्ठानकर्ता को जीविकोपार्जन में सहायता प्रदान करेगा ।
- यह प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की कर्मकाण्ड परम्परा को बनाए रखेगा तथा उसे पोषित पल्लवित एवं संरक्षित करेगा।

कर्मकाण्ड डिप्लोमा के प्रथम सेमेस्टर के प्रश्न–पत्रों की योजना विधि :

क्र. सं.	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक
1.	प्रथम प्रश्न पत्र	**DKK-101**	वैदिकचर्या का ज्ञान	4	75+ 25	33
2.	द्वितीय प्रश्न पत्र	**DKK-102**	पूजन पद्धति	4	75+ 25	33
3.	तृतीय प्रश्न पत्र	**DKK-103**	पंचांग परिचय	4	75+ 25	33
4.	चतुर्थ प्रश्न पत्र	**DKK-104**	प्रायोगिक (कर्मकाण्ड)	4	75+ 25	33
			कुल योग	16	400	132

स्वयं प्रकाश अवस्थी

प्रथम सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
कोर्स कोड : DKK-101
वैदिकचर्या का ज्ञान

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटें

1. नित्यकर्म विधिः
2. सन्ध्या + गणपति अथर्वशीर्ष
3. स्वस्तिवाचन,
4. देवस्तुतिः, संकल्प
5. षोडशोपचार पूजन
6. गणेशाम्बिका पूजन
7. रूद्रष्टाध्यायी–प्रथम, द्वितीय अध्याय

नोट– साथ में पौराणिक श्लोक भी

प्रथम सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड : DKK - 102
पूजन पद्धति

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटें

1. कलश स्थापना
2. पुण्याहं वाचन
3. पूजन से सम्बन्धित ज्ञातव्य विषय
4. पुष्पार्पण, ग्राह्य, त्याज्य पुष्प इत्यादि का विचार

नोट– साथ में पौराणिक श्लोक भी

स्वयं प्रकाश अवस्थी

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड : DKK - 103

पंचांग परिचय

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100

समय : 3 घंटें

1. पंचांग अवलोकन (परिचय)
2. तिथि, वार,
3. नक्षत्र,
4. योग,
5. करण,
6. संवत्सर,
7. अयन,
8. ऋतु,
9. मास,
10. पक्ष,
11. संज्ञा शुभाशुभ तिथि वार, नक्षत्र,
12. योग
13. करण
14. पंचक
15. मूल
16. अग्नि वास
17. शिववास
18. नक्षत्र द्वारा राशि ज्ञान इत्यादि।

पाठ्य पुस्तकें :

1. नित्यकर्म पूजाप्रकाशः गीताप्रेस–गोरखपुर ।
2. संस्कार विधि–परोपकारिणी सभा, अजमेर ।
3. पंच महायज्ञ विधि–परोपकारिणी सभा अजमेर।
4. आर्य पर्व पद्धति – जवाहर बुक डिपो, मेरठ।
5. पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक।

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय दर्शन की चिंतनधारा–राममूर्ति शर्मा, चौखम्भा ओरिएंटलिया, दिल्ली ।
2. भारतीय संस्कृतिः कुछ विचार–सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजपाल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. भारतीय दर्शन (भाग 01–02) सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजपाल प्रकाशन, दिल्ली ।
4. धर्मशास्त्र का इतिहास (भाग 01–05) पी0वी0 काणे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ।
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर ऋषि चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी ।
6. वेद और भारतीय संस्कृति–किरीट जोशी, स्टैंडर्ड पब्लिशर्स (इण्डिया) नई दिल्ली ।
7. श्रीमद्भगवतगीता–हिंदी–अंग्रेजी अनुवाद सहित, गीताप्रेस, गोरखपुर
8. श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य–बाल गंगाधर तिलक ।

स्वयं प्रकाश अवस्थी

कर्मकाण्ड डिप्लोमा के द्वितीय सेमेस्टर के प्रश्न–पत्रों की योजना विधि :

क्र. सं.	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक
1.	प्रथम प्रश्न पत्र	**DKK-201**	विशिष्ट पूजन	4	75+ 25	33
2.	द्वितीय प्रश्न पत्र	**DKK-202**	देव स्थापना एवं पूजन	4	75+ 25	33
3.	तृतीय प्रश्न पत्र	**DKK-203**	मुहूर्त एवं मेलापक	4	75+ 25	33
4.	चतुर्थ प्रश्न पत्र	**DKK-204**	प्रायोगिक (कर्मकाण्ड)	4	75+ 25	33
कुल योग				**16**	**400**	**132**

द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
कोर्स कोड : DKK - 201
विशिष्ट पूजन

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटें

1. षोडश मातृका पूजन,
2. सप्तघृतमातृका पूजन,
3. षड्विनायकपूजन,
4. आयुष्यमंत्रजाप,
5. नान्दीश्राद्ध,
6. ब्राह्मणवरण
7. पंचगव्यकरण,
8. रूद्राष्टाध्यायी–तृतीय–चतुर्थ अध्याय से अष्टम अध्याय तक।

नोट – सम्बन्धित पौराणिक श्लोक भी

स्वयं प्रकाश अवस्थी

द्वितीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड : DKK - 202
देव स्थापना एवं पूजन

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

1. ग्रह स्थापना,
2. अधिदेवता,
3. प्रत्यधिदेवता पंच लोकपाल,
4. वास्तु क्षेत्रपाल,
5. दश दिक्पाल,
6. अग्निस्थापन,
7. हवन सामान्य विधिः
8. बलिदान, पूर्णाहुतिः,
9. वसोर्द्धारा संक्षिप्त, अर्पण, आशीर्वाद विसर्जन

नोट – सम्बन्धित पौराणिक श्लोक भी

द्वितीय सेमेस्टर
तृतीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड : DKK-203
मुहूर्त एवं मेलापक

क्रेडिट :

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

1. यात्रा विचार सामान्य
2. ग्रहबल–उच्च नीच, मूल त्रिकोण आदि
3. भावानुसार–ग्रहों के शुभाशुभ अवस्था मेलापक विचार
4. अष्टकूट विचार
5. मंगली विचार एवं दोष निवारण।
6. गृहारम्भ एवं गृह प्रवेश मुहुर्त
7. उपनयन मुहूर्त
8. विवाह मुहूर्त
9. यात्रा मुहूर्त

स्वयं प्रकाश अवस्थी

पाठ्य पुस्तकें :

1. गीतायाः भाषा संस्कृतम् – बलदेव उपाध्यायए चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
2. वैदिक साहित्य और संस्कृति–बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी
3. भारतीय धर्म और दर्शन – पंडित बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
4. कर्मठगुरूः (कला हिन्दी व्याख्या सहित) लेखक – मुकुन्दवल्लभ।
5. रूद्राष्टाध्यायी।

संदर्भ ग्रंथ :

1. राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य – शशि तिवारी (संपादक), विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली ।
2. पुराणों में राष्ट्रीय एकता–पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
3. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना–हरिनारायण दीक्षित,ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
4. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद और भारतीय राजशास्त्र–शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
5. राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक स्वर–प्रेमलता मोदी (संपादक), नेषनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
6. आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास–जितराम पाठक, राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचारक–किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
8. दुर्गा सप्तशती – (गीता प्रेस गोरखपुर)

स्वयं प्रकाश अवस्थी

निदेशक,
दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर

महोदय,

सूचित करना है कि दीनदयाल शोध केन्द्र में संचालित एम0ए0 ज्योतिर्विज्ञान एवं डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम के निमित्त् दिनांक 11 मई, 2024 को बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक आम सहमति से कुछ संशोधनों के साथ सम्पन्न हुई ।

जिसमें मैं अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त करता हूँ ।

भवदीय

डॉ. विजय शंकर द्विवेदी
दिल्ली विश्वविद्यालय।

निदेशक,
दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर

महोदय,

सूचित करना है कि दीनदयाल शोध केन्द्र में संचालित एम0ए0 ज्योतिर्विज्ञान एवं डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड पाठ्यकम के निमित्त् दिनांक 11 मई, 2024 को बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक आम सहमति से कुछ संशोधनों के साथ सम्पन्न हुई ।

जिसमें मैं अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त करता हूँ ।

भवदीय

डॉ. अंशुल दुबे,
तिलक डिग्री कालेज, औरैया,